अध्याय चौथा

४.०. : फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यास में सामाजिक संघर्ष

४.१. : प्रस्तावना

४.२. : वर्गीय संघर्ष

४.३. : युवा वर्ग का संघर्ष

४.४. : आर्थिक संघर्ष

४.५. : पुरातन और नूतन संघर्ष

४.६. : मठ के अधिकार प्राप्ति के लिए संघर्ष

४.७. : राजनीतिक संघर्ष

४.८. निष्कर्ष

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

SHIVAJI UNIVERSITY
LIBRARY
KOLHAPUR

४.१ प्रस्तावना -

'समाज के अंतर्गत परिवार से लेकर विश्व स्तर तक का मानव समुदाय आता है। समाजशास्त्र ने समूहों को दो विभागों में बाँटा है, अन्त : समूह और बाह्य समूह। साहित्य में इन दोनों समूहों के पात्र आते हैं। प्रत्येक अन्त: समूह का पात्र दूसरे समूहों के कार्यों संस्कृतियों, आदर्शों, पद्धतियों आदि से टकराते हैं। इस प्रकार की टकराहट का समाज साहित्य में आदि से अंत तक दिखायी देता है। समाज में जब आर्थिक उत्पादन के साधन बदलते रहते हैं। उसी के साथ सामाजिक संबंध और सांस्कृतिक चेतना भी बदलती है। इसका जीता जागता चित्र मैला आँचल में है। यह बदलाव की प्रक्रिया संघर्षात्मक होती है।' डॉ. अंजली तिवारी जी का कहना है कि, " रेणु ने सच्चे कलाकार की तरह इस बात को समझा है कि चरित्र न तो एकदम निजी होते हैं न एकदम सामाजिक। वे दोनों के संघर्ष से बनते हैं। " १ रेणु के ग्राम परिवेश के विभिन्न स्वभावों के पात्रों की सृष्टि अपने साहित्य में की है। इन पात्रों में अलग - अलग रूप के संघर्ष - दिखायी देते है। मनुष्य जीवन ऐसा है कि संघर्ष के बिना नहीं चलता। मानव जीवन में पारिवारिक संघर्ष होते हैं, पास पड़ोस का संघर्ष, मित्र - मित्र में संघर्ष

SHIVAJI-UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

आर्थिक संघर्ष, युवा वर्ग के संघर्ष, जातिवाद को लेकर संघर्ष, कुर्सी के प्राप्ति के लिए संघर्ष आदि बहुत सारे संघर्ष रोज के व्यवहार में दिखायी देते है। देश की जनता हो संघर्षरत है और साहित्य दर्पण है तो मानव जीवन की प्रतिकृति है। इसीलिए हम ठोस रूप से कह सकते हैं कि साहित्यकारों द्वारा जो निर्मित साहित्य है वह संघर्षरहित कैसे हो सकता है ?। फणीश्वरनाथ रेणुजी द्वारा लिखित " मैला आँचल " में भी यही संघर्ष की प्रवृत्ति नजर आती है। रेणुजी ने यहाँ देहाती जीवन का चित्रण किया है। इस उपन्यास में उन्होंने अच्छाइयाँ और बुराइयाँ इन दो विरोधी बातों को उजागर किया है। इस उपन्यास की कथाओं के बीच भी टकराहट है। इसका मतलब यह कि कोई भी कथा प्रमुख न होकर कुछ दूर तक निश्चिंत भाव से बहने नहीं पाती। वह ज्यों ही थोडी दूर चलती है कि एक दूसरी कथा उसे काट देती है और दूसरी तीसरी और तीसरी को चौथी काट देती है। इस प्रकार कथा खंडो की पारस्पारिक टकराहट से एक कथा बनी है। " मैला आँचल " के कथाओं के बीच टकराहट है, पात्रों के बीच संघर्ष है तो ये संघर्ष किस - किस प्रकार के हैं यह भी देखना आवश्यक है। पूरे उपन्यास के जमींदार - किसान, संथाल - जमींदार, पुरातन और नूतन के बीच संघर्ष है। उसी प्रकार युवा वर्ग का संघर्ष, आर्थिक संघर्ष, मठ की महंती प्राप्ति के लिए

संघर्ष, स्त्रियों के बीच संघर्ष, पति - पत्नी के बीच संघर्ष आदि अनेक प्रकार के संघर्षों का वर्णन इस उपन्यास में किया है।

४.२ वर्गीय संघर्ष -

उच्चवर्ग के जमींदार लोग और मजदूरों में बड़े पैमाने पर संघर्ष है। जमींदार लोग मजदूरों से बहुत काम करवा लेते हैं, लेकिन उसके बदले में कुछ भी दाम नहीं देते। मजदूरों को सवा रुपया मजदूरी दी जाती है। इसमें एक व्यक्ति का भी पेट नहीं भरता। महँगाई बढ रही है लेकिन उसके बदले में खेत - मजदूर को कुछ नहीं मिलता इसका लाभ जमींदार लोग उठा रहे हैं। गाँव में मजदूरों का जीना दूभर होने के कारण वे गाँव छोडकर शहर की जूट - मिलों की ओर भागने लगे हैं। इस प्रकार उनका पूरा जीवन संघर्षमय बन गया है। सहदेव मिसर जो गाँव का महाजन है वह भी किसानों - मजदूरों को सादे कागज पर टीप ले लेता है और मनमानी करता है। किसान - मजदूरों का इनके साथ भी संघर्ष है। संघर्षमय किसानों और मजदूरों के संघर्षमय जीवन के प्रति डॉक्टर संवेदना प्रकट करते हुये कहते हैं - " कफ से जकडे हुए दोनों फेफडे, ओढने को वस्त्र नहीं, सोने को चटाई नहीं, पुआल भी नहीं। भीगी हुई धरती पर लेटा न्यूमोनिया का रोगी मरता नहीं, है, जी जाता है। ..... कैसे ? " २ जमींदारों के पास हजारों बीघे

जमीन है परंतु वे पाँच बीघे जमीन के लिए भी किसान मजदूरों के साथ संघर्ष करते हैं। और इस संघर्ष को मिटाने के लिए कानून की आवश्यकता है परंतु कानून बनाने से पहले ही कानून को बेकार करने के तरीके खोज लिए है। किसान - मजदूर लोग भूख से तड़फ रहे हैं। लेकिन मरते नहीं। डॉक्टर ममता को लिखते हैं - क्या करेगा वह संजीवनी बूटी खोजकर २ उसे नहीं चाहिए संजीवनी। भूख और बेबसी से छटपटाकर मरने से अच्छा है मैलेग्नेण्ट मैलेरिया से बेहोश होकर मर जाना।"३ उच्चवर्ग का जो समाज है वह निम्नवर्गीयों का शोषण करता है और इसी के बीच संघर्ष का निर्माण होता है। समाज में सामान्य लोगों को केवल जीवन निर्वाह के कारण विषमताओं और अन्याय के बीच रहना पड़ता है।

वर्गीय संघर्ष में जिसप्रकार जमींदार, किसान, जमींदार मजदूरों के संघर्ष आते हैं उसी प्रकार जमींदार और संथालों के बीच भी संघर्ष है। संथाल लोग शिक्षा संस्कार और साधन के अभाव के कारण उच्चवर्गीयों को मुँहतोड़ जवाब नहीं दे सकते। और यहीं उनकी मजबूरी है। प्रतिकूल परिस्थितियों के मध्य जीते रहने के कारण शोषित होने और अन्याय सहते रहने की एक परम्परा उनके रक्त में घुल - मिल गयी है। मेरीगंज के अंचल में उच्चवर्गीयों के द्वारा चूसे गये लोगों का

प्रतिनिधित्व संथाल जाति के लोग करते हैं। ये लोग इतना परिश्रम करते हैं कि मेरीगंज की सैकड़ों बीघे परती धरती आबाद करवा ली गयी है। फिर भी इनका जीवन संघर्षरहित नहीं है। इन लोगों को गाँववालों के साथ बसने नही दिया जाता। ये लोग निकटवर्ती जंगलों में ही बसे हैं। नीलहे साहबों के नील के हौजों में भी इन्हीं मूक इन्सानों का पसीना बहता रहता था। फिर भी इनके पास अपने झोंपडे बाँधने के लिए अपनी जमीन नहीं है। उनका किसी वस्तु पर अपना कोई अधिकार नहीं है। वर्षों से वहाँ रहने के बाद भी उन्हें मेरीगंज का नहीं माना जाता। उन्हें अपने उस गाँव में कोई अधिकार नहीं मिल पाता जिसका विकास करने में जमीन उर्वर बनाने में उनकी पीढ़ियाँ खप गई है। उनकी फरियाद को भी सुननेवाला कोई नहीं है। वे जब अन्याय, शोषण के खिलाफ आवाज उठाने का प्रयास करते हैं तो उन्हें जोर जुल्म और कानून दोनों तरह से कुचल दिया जाता है सेशन केस में उन्हें आजीवन कारावास की सजा होती है। जमींदारों और सरकार के सामने टीक पाने की शक्ति उनमें नहीं है। और इसीलिए वे अपना कुंठाग्रस्त संघर्षमय जीवन जीते हैं। संथालों के साथ तहसीलदार, बावनदास, कालीचरन, सब मिलकर झगडा करते हैं और अंत में संथालों के दो तीन आदमी मर जाते हैं तो तहसीलदार के आठ दस गुंडे मर

जाते है। इसमें महत्वपूर्ण बात यह है कि कालीचरन जिसने संथालों को मदद की थी वह भी तहसीलदार को मिल जाता है।

एक - बा - एक दिन ये शोषित वर्ग शोषकों के विरुद्ध आवाज उठाते हैं। इसके लिए प्रेरणा देने का कार्य सोशलिस्ट कालीचरन के द्वारा होता है। वह शोषितों के दिल में आग लगाना चाहता है। उन्हें जगाना चाहता है। कालीचरन की सभा में सभी संथाल, किसान, मजदूर लोग आ जाते है। परंतु जब अंग्रेज कलक्टर इनकी व्यवस्था को सुधारने की चेष्टा करता है तो जमींदार और राजा लोग " अपने भाडे के लठैतों को जगह - जगह संथालों की लहलहाती फसलोंपर हुलका कर संथाल टोली पर चढाई करवाकर, रुपये - लाठी के हिसाब से बटोरे हुए लठैतों को संथालों की तीरों से जख्मी करवाकर सबल प्रमाण पेश कर दिया था। संथालों के जोर - जुल्म का मुख्य कारण है यह अंग्रेज कलक्टर। " ४ इसप्रकार वर्गभेद के अंतर्गत जमींदार-किसान, जमींदार - संथाल, जमींदार - मजदूर इनमें बडे पैमाने पर संघर्ष था। वर्गीय संघर्ष के अंतर्गत दो टोलियाँ भी आती है। राजपूत टोली के लोग कायस्थों के विरुद्ध संघर्ष करते हैं। वे कायस्थों को राजपूत मानना पसंद नहीं करते। और इन दोनों को लडाने का कार्य ब्राहमण टोली के लोग करते हैं। सेवादास जब कहते है कि सद्‌गुरु साहेब

ने सपने में आकर कहा है कि इसपिताल खोलकर परमारथ का कारज कर रहा है तो सारे गाँव को भंडारा तो दे दो। भंडारा देने की तैयारी की जाती है, लेकिन इसी के बीच भी जातिभेद है। और यहि वर्गीय संबंध तनाव का वातावरण निर्माण करता है। बाभन लोग कहते है कि हमारा अलग प्रबंध होना चाहिए। सिपैहिया टोली के लोग भी कहते है कि हम भी ग्वालों के साथ बैठकर खाना नहीं खायेंगे। यादव टोली के लोग कहते है कि हम भी धानुक लोगों के साथ बैठकर नहीं खायेंगे। इतनाही नहीं तो बच्चों में भी संघर्ष है। राजपूत और कायस्थों के बच्चे दूसरे टोले के बच्चों को उधर नहीं जाने देते हैं।

४.३ युवा वर्ग का संघर्ष -

युवा वर्ग के अंतर्गत सोशलिस्ट पार्टी का कालीचरन, वासुदेव, सुंदर, सुंदर, देशसेवक बालदेवजी आदि के बीच संघर्ष है। ये युवा वर्ग गाँव में सभी दृष्टि से क्रांति लाना चाहता है। वे लोग स्त्रियों पर हुये अन्याय को बिल्कुल सह नहीं सकते। एक बार जब फुलिया के घर में सहदेव मिसर रात को घुस जाता है तो फुलिया पिता के डर से सच - सच नहीं बता देती कि सचमुच ही वह मेरे घर में घुसा था। तो इसी समय कालीचरन जब उसे पूछता है तो वह सच -

सच बता देती है और तभी कालीचरन फैसला करता है कि फुलिया की शादी खलासी से ही होगी। इस प्रकार बाप का अपनी बेटी पर होनेवाले अन्याय को भी वह सहता नहीं। कालीचरन, वासुदेव, सुंदर गूदर किसान मजदूरों पर होनेवाले अन्याय के विरुद्ध भी आवाज उठाते हैं। और एक सैनिक भाषण देता है। " जिस तरह सूरज का डूबना एक महान् सच है, पूँजीवाद का नाश होना भी उतना ही सच है। " ५ इसके बीच बालदेवजी कुछ बोलने के लिए खडे होते हैं तो वासुदेव उठकर तुरन्त उसकी बोलती बंद कर देता है। वह कहता है - " बालदेवजी, आपका विख्यान हम लोग बहुत सुन चुकें हैं। आप पूँजीवाद हैं। इस सभा में आप नहीं बोल सकते। " ६ जनता भी इसी समय विरोध करती है। कालीचरन सभा में संथालों को किसानों को समझा रहा था - " जमीन किसकी ? .... जोतनेवालों की। जो जोतेगा वह बोएगा, जो बोएगा वह काटेगा। कमानेवाला खाएगा, इसके चलते जो कुछ हो।" ७

एक बार लरसिंघदास महंथी पाने के हेतु रामदास को महंथी से हटा देने के लिए आचारजगुरु और नागाबाबा को ले आता है, तो नागाबाबा लछमी को गालियाँ देते हैं, रामदास को चुना हल्दी पोत दी जाती है और फैसला हो जाता है कि लरसिंघदास को महंती दे दी जायेगी। परंतु जब लछमी कालीचरन को सबकुछ बता देती है तो उसी

समय कालीचरन लरसिंघदास नागाबाबा के विरुद्ध संघर्ष के लिए तैयार होता है। वह कहता है " आचारज जी। आप कहते है, महंथ सेवादास बिना चेला के मरा है। आप क्या गाँव के सभी लोगों को उल्लू ही समझते हैं। " ८ और आगे जाकर वह कहता है, " हम जानते है और अच्छी तरह जानते हैं कि रामदास इसमठ का चेला है, महंथ सेवादास का चेला है। उसको महंथी का टीका न देकर आप एक नंबरी बदमास को महंथ बना रहे हैं। ······ मठ में हम लोगों के बाप - दादा ने जमीन दान दी है, यह किसी की बपौती संपत्ति नहीं। " ९ उसके बाद वासुदेव और सुंदर नागाबाबा को बहुत पीटते है बाद में लरसिंघदास भी भागते हैं। महंती रामदास को मिल जाती है। तो यह युवा लोगों का जो संघर्ष है वह ढोंगी साधुओं के ढकोसले को मिटाने के लिए किया गया संघर्ष है। कालीचरन रोज मठ पर थोडी देर के लिए जरुर जाता है। कालीचरन के स्वभाव में जरा कड़ापन है। इसी के सहारे वह अन्याय के विरुद्ध लड़ता है। बावनदास भी अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करता है। सोमा भी कालीचरन से ज्यादा बुलंद है। पूँजीवादी बालदेव को भगाने के लिए भी वह कालीचरन से आज्ञा माँगता है। बाद में कालीचरन, वासुदेव, सोनियर, चुनरा, जगदेवा, सोन्ना सभी को डकैती केस में गिरफ्तार किया जाता है। परंतु

उसका कोई भी दोष न होते हुये भी उसे पकड़ा जाता है। परंतु वह जेल से भी भागता है। डाक्टर साहब को भी संघर्ष के कारण गिरफ्तदार किया। उनपर भी इल्जाम लगाया जाता है कि गाँव में हैजा उन्होंने फैलाया। गाँव के लोगों को कमजोर कर दिया। इस - प्रकार के युवा वर्ग के संघर्ष हैं।

४.४ <u>आर्थिक संघर्ष -</u>

रेणु के उपन्यास में आर्थिक संघर्ष महत्वपूर्ण है। जमींदार लोग और तहसीलदार लोग किसानों मजदूरों से काम करवा लेते हैं परंतु उसके बदले में दाम नहीं देते। इसी के कारण लोगों की आर्थिक स्थिति बहुत ही बुरी बन गयी है। खलिहान में बैलों के झुंड से दबनी - मडनी होती है। बैलों के मुंह में जाली का जाब लगा दिया जाता है। खलिहान के बैलों जैसी स्थिति किसानों की हो गयी है। बैलों के समान उनसे काम करवा लिया जाता है और खाने को कुछ भी नहीं दिया जाता। तहसीलदार लोग धान तैयार होते ही छिपाकर रखते हैं।

अर्थ जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग है। प्रत्येक युग का सामाजिक सांस्कृतिक जीवन उस युग के आर्थिक संघर्षों से प्रभावित

रहता है। अर्थ वैषम्य के कारण ही समाज में आर्थिक विकास के विविध संघर्ष और समस्याएँ निर्माण होती हैं। अत: आर्थिक संघर्ष को समाज के विविध संघर्षों में महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है।

जमींदार तहसीलदारों के पास एक हजार - हजार बीघा जमीन है। महँगाई के काल में अनाज का फायदा उन्हे ही मिलता है उसमें से थोडा भी हिस्सा वे किसान या मजदूरों को नहीं देते। इसी अर्थवैषम्य के कारण गाँव की स्थिति बुरी बन गयी। कपडे के बिना सारे गाँव के लोग अर्धनग्न है। मर्दों ने पैंट पहनना शुरू कर दिया है और औरतें आँगन में काम करते समय एक कपडा कमर में लपेटकर काम चला लेती हैं, बारह वर्ष तक के बच्चे नंगे ही रहते हैं। " १० यह स्थिति है अर्थवैषम्य के कारण। पैसों के अभाव के कारण सात महिने के बच्चे को बथुआ और पाट के साग पर पाला जाता है। कालीचरन किसानों के बीच भाषण देता है - " ये पूँजीपति और जमींदार खटमलों और मच्छरों की तरह होतख हैं। ..... खटमल! इसीलिए बहुत - से मारवाड़ियों के नाम के साथ " मल " लगा हुआ है और जमींदारों के बच्चे मिस्टर कहलाते हैं। मिस्टर ...... मच्छर। " ११ इससे स्पष्ट होता हैं कि गरीबों का शोषण जमींदार याने उपमा के रूप में जमींदाररूपी मच्छर करते है। छोटे - छोटे किसानों की जमीनें कौड़ी के

मोल बिकती है। आर्थिक प्राप्ति के कारण या अपना पेट भरने के लिए मेरीगंज के मजदूर या किसान वर्ग शहर की ओर जा रहे हैं।

अर्थप्राप्ति के लिए बुरे मार्गों को अपनाया जाता है। अर्थप्राप्ति के लिए स्त्रिया अनैतिक संबंध रखती है। यहाँ तक कि माँ अपनी बेटी की शादी तक नहीं करना चाहती। महँगूदास की स्त्री अपनी बेटी फुलिया की शादी खलासी से नहीं करना चाहती तो वह उसे घर में ही बिठाकर कुल्टा बनाना चाहती है। फुलिया को यह पसंद नहीं होते हुये भी वह अपनी माँ को कुछ भी नहीं कह सकती। अपनी लडकी को बेचकर ऐश करना यहीं उसका कार्य था। रमजूदास की स्त्री कहती है - " अरे फुलिया की माये! तुम लोगों को न तो लाज है और न धरम। कब तक बेटी की कमाई पर लाल किनारीवाली साडी चमकाओगी ? आखिर एक हद होती है किसी बात की। मानती हूँ कि जवान बेवा बेटी दुधार गाय के बराबर है। मगर इतना मत दूहो कि देह का खून भी सूख जाय। " १२ इससे स्पष्ट होता है कि अर्थ - प्राप्ति के लिए पाली पोसी हुयी बेटी की भी याद नहीं रहती। इसमें उनका भी कोई दोष नहीं है। जो उन्हे चूसते है जमींदार तहसीलदार उन्हीं का दोष है। स्वयं महँगूदास की स्त्री भी कलरू के

साथ रसलील्ला करती थी। रमजूदास की स्त्री सिंघ्या की रखेली थी। सहदेव मिसर ने भी महँगूदास की सादे कागजपर टीप लेकर फुलिया को भी रखैल बनाने का तय कर लिया था। जब कालीचरन कहता है कि महँगूदास अपने फुलिया का चुमौना खलासी से कर दो तभी महँगूदास कहता है , " सहदेव मिसर के पास सादे कागजपर मेरा अँगूठा का टीप है। यदि उसे भरकर नालिस कर दे तब - " १३ तभी कालीचरन कहता है कि वह एक भी पैसा तुमसे नहीं पा सकते। इससे स्पष्ट होता है कि आर्थिक दुर्बलता के कारण बाप ने भी अपने बेटी का सौदा सहदेव के साथ किया है। यह सब आर्थिक वैषम्य के कारण है। और इसी कारण ही आर्थिक संघर्ष ही महत्त्वपूर्ण माना जाता है। यही आर्थिक दुर्बलता गरीबों के जीवन में तूफान मचा देती है।

मठ के महंतों के संदर्भ में भी यही स्थिति है। लरसिंघदास जब आचारज जी का संदेशा लेकर आते हैं तो मठ की संपत्ति देखकर एक रात में ही उनके मुँह में लार टपकने लगती है। और महंती प्राप्ति के लिए नागाबाबा को पाँच - "भर " गाँजा दिया और अधिकारीजी को एक सौ रुपया कबूल किया है। परंतु अंत में कालीचरन से उनका संघर्ष होता है और उसे भागना पडता है।

आर्थिक संघर्ष को मिटाने के लिए चरखा सेंटर की स्थापना की जाती है। शिवनाथ चौधरी सभा में खादी में अर्थशास्त्र पर प्रकाश डाल रहे हैं। आँकड़े देकर साबित कर रहे हैं कि यदि घर का एक - एक व्यक्ति चरखा चलाने लगे तो गाँव से गरीबी दूर हो जाएगी, अन्न - वस्त्र की कमी नहीं रहेगी। औरतों को चरखा सिखाने के लिए एक मास्टरजी भी आई हैं। वह औरतों से कहती है - "चरखा हमार भतार - पूत, चरखा हमार नाती, चरखा के बदौलत मोरा दुआर झूल हाथी। १४ तहसीलदार साहब ने भी चरखा सेंटर के लिए अपना गुहाल - घर दे दिया है, खद्दर पहनने लगे हैं। क्योंकि उन्होंने गरीबों का जितना आर्थिक शोषण किया उसके लिए पुण्य कर्म के रूप में वे कुछ करना चाहते हैं। और इसी के कारण वे सभी किसानों को अपनी जमीन बाँट देते हैं और स्वयं तिरथ करने को चले जाते हैं।

आर्थिक परिस्थिति से ग्रस्त किसान संघर्ष के मैदान में खड़ा होकर शोषकों को परास्त करनेका प्रयत्न कर रहा है। उसी प्रकार संथालों की भी आर्थिक स्थिति बदतर की है। " नील के साहबों के नील के हौज ज्यादातर इन्हीं मूक संतानों के काले शरीर के पसीने से भरे रहते थे। " १५ परंतु इन्हें आर्थिक लाभ

नहीं होता था। साहबों के कोडों की मार खाकर जमींदारों की कचहरियों में दिन - भर एक कड़ी सजा उन्हें भुगतनी पड़ती थी। इनसे हजारोंबीघा बनजर जमीन आबाद करवा ली थी। परंतु इन्हें रहने के लिए या खाने के लिए कुछ भी नहीं दिया जाता था। सिर्फ एक अश्वासन ही उन्हें मिलता था। जिस जमीन पर उनके झोपडे हैं वह भी उनकी नहीं। इस प्रकार की आर्थिक विषमता के कारण संथाल लोग भी क्रोधित होते हैं। और उनके साथ खुले आम संघर्ष के लिए तैयार होते हैं। वे जानते हैं कि, कोई भी साथ देनेवाला नहीं है। इसीलिए " संथाल लोग बिरुनाथ परसाद के चालीस बीघावाले बोहन के खेत में बोहन लूट रहे हैं। " १६ यह सुनकर सभी लोग इनका सामना करने के लिए जाते हैं। परंतु इसमें तहसीलदार और हरगौरी मर जाते है। संथाली टोली के चार आदमी ठंडे होते हैं और सात घायल होते हैं। तहसीलदार की हँसेरी में दस गुंडे मर जाते हैं। तीस आदमियों को मामूली घाव लग जाता है। यह सब आर्थिक विषमता के कारण मानव के लिए भी जुल्म सहने की कोई सीमा होती है। जब मर्यादा का उल्लंघन होता है तो मनुष्य संघर्षमय बन जाता है। संथालों ने आर्थिक दृष्टि से बहुत कष्ट झेले और अंत में जब हद हो जाती है तो अपने आप ही वे लडने के लिए तैयार हो जाते हैं। इस संघर्ष में संथालिनें भी रोती है।

" मैला आँचल " में रेणु ने गाँव में व्याप्त गरीबी

और बेकारी को बड़ी सजीवता के साथ अभिव्यक्त किया है। डा॰ प्रशान्त अपने भीतर इस प्रकार के उठते हुये अनेक असंभावित प्रश्नों का बोझ ढोता है। " आम से लदे पेड़ो को देखने के पहले उसकी आँखे इंसान के उन टिकोलों पर पड़ती हैं, जिन्हें आमों की गुठलियों के सूखे गूदे की रोटी पर जिंदा रहता है। " १७ इस गरीबी का कारण बेकारी, जनसंख्या में वृध्दि संपत्ति का विषम विभाजन और धनिकोंव्दारा निम्न वर्ग के लोगों का शोषण है। इससे धनिकों की स्वार्थी प्रवृत्ति भी दिखाई देती है। अपने दायित्व के प्रति इनकी उपेक्षा के कारण जन सामान्यों को अनेक यातनाएँ सहनी पड़ीं। निम्नांकित उदाहरण इस पक्ष की पुष्टि करता है - " तहसीलदार साहब ने धान तैयार होते ही न जाने कहाँ छिपा दिया है। दरवाजे पर दर्जनों के बखार हैं, लेकिन इस साल सब खाली। जमनादरों के अड्डे है। ...... सरकार शायद धान - जप्ती का कानून बना रहे है। " १८ रेणु के " मैला आँचल " में मजदूर - वर्ग में उत्पन्न यह जागरूकता इस प्रसंग से स्पष्ट होती है - संथाल टोली की कोई औरत बाबू टोला के किसी आंगन में काम करने नहीं जायेगी। बाबू बबुआन लोग शाम को गांव में आवे कोई हर्ज नहीं। किसी की अंदर हवेली में नहीं जा सकते। मजदूरी में जो एक आध - सेर मिले, उसी में सन्तोष करना होगा। बालाई आमदनी में कोई बरकत नहीं। " कालीचरन के इस वक्तव्य से शत - प्रतिशत सच्चाई लक्षित होती है। हमारे समाज में व्याप्त पूँजीपति व जमींदार वर्ग किस तरह से मजदूरों का शोषण करते हैं, इस बात की

पुष्टि उपर्युक्त प्रसंग से होती है।

स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात शहरों का विकास बड़ी तेजी से हुआ गांव की अपेक्षा शहरों में अनेक सुख - सुविधाएँ रोजी - रोटी अधिक मात्रा में उपलब्ध है। अतः गाँव शहरों की ओर मुड़ते जा रहे है। सुमिरतदास द्वारा जूट मिल के खुलने का गांव को समाचार दिया जाना नागरीकरण की प्रक्रिया को स्पष्ट करता है। गाँवों में तीन जूट मिल खुले है और मजदूरी दो रुपया है। इसके कारण लोग रोजी - रोटी की सुविधा के कारण उधर ही जाने लगे है।

निष्कर्ष रूप में उपन्यास में आर्थिक संघर्ष बहुत बड़ी मात्रा में पाया जाता है। परंतु महत्त्वपूर्ण बात यह है कि उसके लिए भी गरीब लोग सामना करते है। निर्धन संथालों, किसानों और जमींदारों के बीच आ-र्थिक संघर्ष की यह योजना लेखक की मानवीय उदात्तता से प्रस्तुत कल्पना है। इस चित्रण के माध्यम से लेखक ने मानवीयता के प्रतीक इस शोषित और उपेक्षित वर्ग के प्रति अपनी संवेदना प्रस्तुत की है।

४.५ <u>पुरातन और नूतन का संघर्ष</u> -

आधुनिकता और पुरातनता दोनों में संघर्ष नित्य रहता

है। प्रत्येक युग की अपनी मान्यताएँ - धारणाएँ होती है। समय के अनुसार जैसे - जैसे समाज परिवर्तित हो जाता है वैसे - वैसे पुरानी मान्यताओं का स्थान नवीन मान्यताएँ लेती हैं। वस्तुत: पुरातन मूल्य के इस खंडहर पर ही नवीन मूल्यों की आधारशिला टिकी रहती है। क्योंकि परिवर्तन की प्रक्रिया में कोई भी परंपरा समूल रूप से नष्ट नहीं हो सकती। इसमें विभिन्न सामाजिक राजनीतिक और पारिवारिक क्षेत्र में पुरातन मान्यताएँ और नवीन मान्यताओं का संघर्ष करनेवाली पुरानी और नई पीढी विभिन्न क्षेत्र में संघर्ष करने लगती है।

आज से करीब पैंतीस साल पहले डब्ल्यू जी मार्टिन ने मेरीगंज गाँव में कोठीकी नींव डाली और घोषित किया कि आज से इस गाँव का नाम मेरीगंज हुआ। " कहा जाता है कि एक बार एक किसान के मुँह से इस गाँव का पुराना नाम निकल गया था। बस, और जाता कहाँ है ? साहब ने पचास कोड़े लगाए थे गिनकर। " १९ आज भी लोगोंमेंइस गाँव का पुराना नाम लेने में अज्ञात शंका होती है। तो स्पष्ट है कि पुराना नाम मालूम होते हुये भी लोग नहीं लेते,इसमें कितना बड़ा प्रभाव नवीन नाम का पडा है।

मार्टिन की पत्नी " मेरी " जब मेरीगंज में आ जाती है तो उसे " जड़ैया " ने धर दबाया। उसी में ही मेरी को मलेरिया हो जाता

और वह मर जाती है। मेरी की लाश को दफनाने के बाद मार्टिन एक छोटी - सी डिस्पेंसरी की मंजूरी के लिए जमीन आसमान एक करता रहा और अंत में इसपिताल खुल जाता है। परंतु इस प्रकार का जो नया सुधार है वह बूढे जोतखीजी जो लोगों के भविष्य के बारे में चिंतित रहते है जिनका विश्वास जादू - टोने में है वे इस आधुनिक सुविधा का विरोध करते है। जोतखी पुराने विचारवाले है इसीलिए वे नयी सुविधाओं का विरोध करते हुये कहते हैं कि, " कोई माने या नहीं माने, हम कहते हैं कि एक दिन इस गाँव में गिध्द - कौआ उडेगा। लक्षण अच्छे नहीं हैं। गाँव का ग्रह बिगडा हुआ है। किसी दिन इस गाँव में खून होगा खून। पुलिस दारोगा गाँव की गली - गली घूमेगा। और यह इसपिताल? अभी तो नहीं मालूम होगा। जब सूई में दवा डाक्टर हैजा फैलायेगा तो समझना शिव हो। शिव हो। " २० वैज्ञानिकता के आधारपर बनाई हुयी दवाइयाँ ये आधुनिक युग की देन है। परंतु लोग इसे समझ नहीं पाते तो उसे रोग फैलाने का साधन समझते है। यह भी एक प्राचीन और आधुनिक युग का संघर्ष ही है। तहसीलदार साहब की बेटी भी जब बीमार पड जाती है तो सूई और दवा का विरोध करती है। परंतु जो आधुनिकता आ गयी है। उसकी ही विजय होती है। तहसीलदार साहब कहते हैं - " जोतखी जी से एक बार जंतर बनवाके दिया। झाड फूँक भी करवाकर देखा। डाक्टर साहब बस

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

यही मेरा बेटा यही मेरी बेटी ...... सब कुछ यहीं है। " २१ इससे स्पष्ट होता है कि जोतिषी जी का कोई भी असर नहीं हुआ तो तहसीलदार डाक्टर को लेने आ जाते हैं तो जोतिषी का जो नवीनता के प्रति संघर्ष है वह केवल स्वार्थप्राप्ति के लिए है। क्योंकि जब नवीनता गाँव में आ जायेगी तो उनका जादू - टोना गाँव में नहीं चलेगा और आर्थिक प्राप्ति भी नहीं होगी। परंतु अंत में नवीनता की ही विजय होती है और जोतिषी जी के जादू - टोने की पराजय होती है।

४.६ मठ के अधिकार प्राप्ति के लिए संघर्ष -

इसे धार्मिक संघर्ष भी कहा जाएगा। " मैला आँचल " उपन्यास में सभी घटनाओं का थोडी - थोडी मात्रा में क्यों न हो वर्णन आता है। इसमें मठ की व्यवस्था किस प्रकार थी मठ में लक्ष्मी के लिए क्या स्थान था आदि बातों का उद्घाटन किया है। मनुष्य स्वभाव ही ऐसा है कि वह जो है उसपर कभी भी संतुष्ट नहीं रहता। महंत या साधु लोग भी इससे अलग नहीं है। इसका जीता - जागता चित्रण " मैला आँचल " में किया है।

वैसे देखा जाय तो मठ में व्यभिचार ही चल रहा था। प्राथमिक रूप से मठ का महंथ सेवादास था जो कि अंधा था। परंतु अंधा होते हुये भी लक्ष्मी के प्रति उसकी बुरी नजर थी। प्राथमिक रूप से वह वकील साहब को

कहता है कि लछमी हमारी बेटी की तरह रहेगी परंतु बाद में वह दासी, रखेलीन बन जाती है। सेवादास के मरने के बाद महंथी " रामदास " को देने का प्रबंध किया जाता है। रामदास सेवादास का चेला है। लरसिंघदास मुजफ्फरपुर जिले का आदमी खबर लेकर आया है कि आचारजगुरु नए महंथ को चादर - टीका देने के लिए आ रहे हैं। लरसिंघदास भी ढोंगी और भ्रष्टाचारी है। वह भी महंथ साहब का चेला था परंतु वह सोनमतिया कहारिन की बेटी रधिया को लेकर नौटंकी कंपनी में शामिल हो गया था। तो वहाँ भी रधिया पर सभी का अधिकार होता है और लरसिंघदास को पीटकर वहाँ से भगा दिया जाता है। बाद में पुपडी - मठ की महंथी उसे ही मिलती है परंतु " रामबरन " चौधरी" ने उसकी मती फेर दी और लरसिंघदास नेपाली गाँजा का व्यापार करते समय पकडे गये और उन्हें जेल भेज दिया गया इधर महंथ साहब ने शरीर त्यागा और जीऊतदास को चेला कबूल कर उसे महंथी दी गयी। लरसिंघदास जब संदेशा देने के लिए मेरीगंज आता है तो " एक ही रात रहने के बाद उस पर महंथी का मोह सवार हो जाता है। नौ सौ बीघे की काश्तकारी जमीन आम का बाग। दस बीघे में सिर्फ केला ही लगा हुआ है। एक - एक घौर में हजार केले फले है। हजारिया केला, दो कोडी गाय, चार गुजराती भैंस और सबसे कीमती संपत्ति - अमूल्य धन - लछमी दासिन। " २२ लछमी दासिन लरसिंघदास

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

को पूरी तरह पहचानती है। और उसे बिलटा साधु कहती है। आचारजगुरु और नागाबाबा को लरसिंघदास महंथी पाने के लिए रिश्वत देते है। इसी के आधारपर नागाबाबा आते ही लछमी पर बरस पडते है और गालियाँ देते है। आचारजगुरु भी लछमी को स्पष्ट कहते है कि " रामदास को महंथी का टीका नही मिल सकता। क्या सबूत है कि वह महंथ सेवादास का चेला है ? ..... तू मठपर नहीं रह सकती। सेवादास ने तुझे रखलिन बनाया था। सेवादास नहीं है , अब अपना रास्ता देख। " २३ नागा बाबा रामदास को भी गालियाँ देता है। यह सब वृत्तांत लछमी कालीचरन को सुनाती है। तो कालीचरन उसके लिए विरोध करता है। वह कहता है कि आप एक बदमाश को महंथ बना रहे हो। तभी नागाबाबा भी बुरी सुनाते हैं और बाद में नागाबाबा की पीटाई होती है। नागाबाबा दाढी जटा नोंचवाकर कुल्हाडा, छोडकर ही भागते है। लरसिंघदास तो चार चाँटे में ही यें बोल जाते है नहीं लेंगे महंथी, छोड दीजिए हमको। " २४ अत: मठ की अधिकार प्राप्ति का जो भूत लरसिंघदास को लग गया था वह निकल जाता है। अंत में महंथी रामदास को मिलती है। परंतु वह भी धर्म के नामपर व्यभिचार करता है। लछमी को पाने की अपेक्षा करता है। कालीचरन के बल उसे महंथी मिली है। इसी के कारण वह लछमी को पाने में डरता है।

परंतु एक रात दबे पाँव लछमी की कोठरी के पास जाता है। और किवाड की छिटकनी खोलकर अंदर जाता है। लछमी समझाना चाहती है, वह कहती है तुम नरक की ओर पैर बढा रहे हो। मैं तुम्हारी गुरुभाई हूँ रामदास। फिर भी वह सुनता नहीं और अंत में लछमी उसके मुँहपर जोर से थप्पड लगाती है। रामदास उलटकर गिर पडता है। यह है धर्म के नामपर चला हुआ व्यभिचार। मठों की अवस्था ही व्यभिचारी बन गयी है। हर एक साधु या महंत वासना से ग्रस्त बना हुआ है। हर मठ का महंथ उसे क्रीतदासी के रूप में देखना चाहता है। मंदिर के महंत के आसन पर आसीन होनेवाले किसी भी व्यक्ति की वह संपत्ति मानी जाती है। किंतु लक्ष्मी का मन इस बात को स्वीकार नहीं करता। वह इस स्थिति के प्रति मानसिक विद्रोह करती है, पीडित होती है और सहानुभूति देनेवाले बालदेव जी की पत्नी बनना स्वीकार कर लेती है। महंतजी के शारीरिक सान्निध्य तथा मठ के साथ जुडी हुयी धार्मिक नैतिकता का दबाव झेलती हुयी भीतर से रोती है और इसीलिए वह अपने रीतेपन के कारण डाक्टर को देखकर पिघल जाती है। मठकी धार्मिक नैतिकता का दबाव झेलती हुई यह सोचती है कि सत्गुरु मुझे बल दो। सद्गुरु के मरने के बाद सभी दोष अपने को लगाती है। स्त्री सुलभ

विवशता और धार्मिक संस्कार के कारण महंत साहब के मरने पर अपराध बोध और सूनापन महसूस करती है। स्पष्ट है कि यहाँ धार्मिक संघर्ष का रूप बल पकड़ गया है। लछमी कोठारिन के साथ रमपियरिया दासिन बनकर आ जाती है। परंतु उसे हिसाब - किताब का ज्ञान नहीं है। लक्ष्मी और रमपियरिया में भी झगडा होता है। रमपियरिया को भी भंडार की चाबी के लिए मोह हो जाता है। बाद में संदूक की चाबियाँ और भंडार की चाबियाँ लक्ष्मी रमपियरिया को दे देती है। बाद में बालदेव का और लक्ष्मी का भी झगडा होता है। और लक्ष्मी के बिछावन को आग लग जाती है। तो चाहे उच्च जाति का हो या निम्न जाति का हो, लेकिन अधिकार प्राप्ति के लिए झगड रहा है।

निष्कर्ष रूप से रेणुजी धार्मिक भ्रष्टाचार या नैतिक पतन दिखाकर आज के समाज पर प्रकाश डालना चाहते है। लोग किस प्रकार अधिकार प्राप्ति के लिए लड रहे हैं इसका स्पष्ट रूप से चित्रण उन्होंने मठों के व्दारा चित्रित किया है।

४•७ राजनीतिक संघर्ष -

"राजनीतिक संघर्ष जातिवाद का अखाडा बन गया है। स्वातंत्र्योत्तर युग की भारतीय राजनीतिक जिंदगी का निर्मम और सच्चा रूप जातिवाद के व्दारा प्रकट हो रहा है। देश में अनेक छोटे बडे दल

बन गये हैं वे समाजवाद की घोषणाएँ देकर जातीयता के प्रति सजग रहते हैं। सभी राजनीतिक दलों के निर्णय जाति - विषयक जानकारी के आधारपर होते हैं। प्रतिक्रियावादी और प्रगतिवादी गट जातिवाद को प्रोत्साहन देकर सामाजिक दरारे अधिक विस्तृत करने का कार्य कर रहे हैं। रेणुजी ने सूक्ष्म दृष्टि से इस स्थिति की वास्तविकता को प्रभावशाली ढंग से दिखाया हैं। " मैला आँचल " में चित्रित मेरीगंज के काली टोपीवाले, शुद्ध रक्तवाले, हिंदुओं को ही आर्यावर्त में रहने का अधिकारी मानते हैं। वे छोटी जातिवालों को अपनी सभा में प्रवेश नहीं देते। अनेक पार्टियाँ बन गयी हैं। इस लिए बावनदास सोचता है कि, " अब लोगों को चाहिए कि अपनी - अपनी टोपी पर लिखवा ले - भूमिहार, राजपूत, कायस्थ, यादव, हरिजन। .... कौन कार्यकर्ता किस पार्टी का है, समझ में नहीं आता। " २५ सोशलिस्ट पार्टी जाति - पाँति के भेदभाव न मानने का दावा करती है और जाति विषयक जानकारी के आधारपर दाँव - पेच लडाती है। अस्पृश्यता को विष माननेवाले नेतागण इस विषय पर जीवित हैं। उनका निर्णय, हर कदम, हर घोषणा जातिवाद पर निर्भर है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देश की राजनीतिक - व्यवस्था में जातिवाद के रूप में प्रतिष्ठित हुआ है। चुनाव भी जातीयता के आधारपर ही लड़ें जा रहे हैं। उम्मिदवार के गुणों की अपेक्षा जाति को महत्त्व देने के कारण चुनाव की लडाई जाति - जाति की लडाई बन गयी है।

रेणुजी ने मैला आँचल उपन्यास के व्दारा स्पष्ट किया है कि जातिवाद के

कारण गाँवों का जाति के आधारपर बँटवारा हो रहा है।

" मैला आँचल " में जातीय संघर्ष और वर्गीय शोषण को अभिव्यक्ति मिली है। मेरीगंज के लोग जातीय वर्गों में बँटे हुये है। राजपूतों और कायस्थों में पुश्तैनी मन - मुटाव और झगडे होते आये है। ब्राहमण इन दोनों में दुश्मनी बढा देने का कार्य करते हैं। कुछ दिनों से यादवों के दल ने भी जोर पकडा है। जनेऊ लेने के बाद भी राजपूतों ने यादव टोली के लोगों को क्षत्रिय के रूप में मान्यता नहीं दी। प्रमुख रूप से चार टोलियाँ निर्माण हो गयी है। राजपूत टोली, यादव टोली, ब्राहमण टोली जो है वह तीसरी शक्ति का कर्तव्य पूरा करती है। राजपूत समय - समय पर यदुवंशियों के क्षत्रित्व को व्यंग्यविद्रूप के बाणों से उभारते हैं। ब्राहमण टोली के पण्डित हमेशा कायस्थों के खिलाप चढाते रहे हैं। कायस्थ टोली के लोगों से राजपूतों की अनबन हो जाने पर ब्राहमण टोली के पण्डित राजपूतों को लढाते हुये कायस्थों को समझाते है। जब जब धर्म की हानि हुई है, राजपूतों ने ही उनकी रक्षा की है। घोर कलिकाल उपस्थित है, राजपूत अपनी वीरता से धर्म को बचा ले। इस प्रकार का कहना ब्राहमणों का है। ब्राहमण टोली का कार्य इतनाही है कि अपने से समर्थ दो जातियों को परस्पर लड़ाकर अपनी बौध्दिक धूर्तता से अपनी जातीय सुरक्षा में लगे रहना। जातीय स्तर पर गाँवों की स्वार्थपरता बढती जा रही है। प्रत्येक

जाति का संपन्न और समर्थ व्यक्ति अपने नेतृत्व को स्थापित करना चाहता है। और वह दूसरों के विकास में बाधा उत्पन्न करता है। जोतखी काका, खेलावन यादव, ठाकुर रामकिरपाल सिंघ, विश्वनाथ प्रसाद मालिक, मेरीगंज के जातीय नेता है। उन्होंने अपने स्वार्थ साधन के प्रयास में पूरे गाँव भर के जीवन में एक विश्रृंखलता निर्माण कर दी है। इसके अतिरिक्त कांग्रेसी कार्यकर्ता बालदेव का चरित्र भी जातीय भावना से लबरेज है। वह सोचता है - " वह अब अपने गाँव में रहेगा, अपने समाज में अपनी जाती में रहेगा। ····· जाति बहुत बड़ी चीज है। ····· जाति की बात ऐसी है कि सभी बडे - बडे लीडर अपनी - अपनी जाति की पार्टी में हैं। " २६ जातीय भावना को प्रस्तुत करने में लेखक ने बडी कुशलता से काम लिया है। इसके निर्माण में जातीय जीवन के अनेक चित्र भिन्न - भिन्न स्तरों पर प्रकट हो गये हैं। ये चित्र जीवन में विषबेलि की भाँति व्याप्त जातिगत दूषण और उसके भीषण परिणामों को स्पष्ट रूप से दिखाते है। लेखक ने जातिगत टंटों के संभावित परिणामों पर एकाधिक बार संकेत दिया है। हरगौरी और बालदेव की नोंक - झोंक जातिगत विद्वेष में बदल जाती है। परिस्थिति भी नगर, ग्राम और आंचलिक स्तर पर भी जातिवाद का विष फैल रहा था। इसके कारण व्यक्ति - व्यक्ति में मतभेद गहरे होने लगेथे। व्यक्ति समाज जातिगत

आधारपर अलग - अलग समूहों में विभाजित होकर परस्पर द्वेष ईर्ष्या और शत्रुता के भाव को बढा रहा था। इसी के कारण राष्ट्रीय शक्ति एकता और उदात्त मानवीयता के आदर्श भी नष्ट होने लगे थे। डॉ. देवेश ठाकूर ने इसी कारण कहा है कि -" रेणुजी ने इस प्रकार बहुत पहले ही परिलक्षित कर लिया था कि जातिवाद का आधार लेकर खडी हुयी राजनीति समाज के हित साधन और स्वस्थ उद्देश्यों की पूर्ति में कभी सफल नहीं हो सकती। " २७

उपन्यास की शुरुवात ही १९४२ के समय के संघर्ष के साथ हुयी है। जिले भर की घटनाओं की खबर मेरीगंज तक पहुँची थी। गोरा सिपाही एक मोदी की बेटी को उठाकर ले जाने के कारण पूरे गाँव को घेरकर आग लगा दी गयी थी। इतना समाचार पाने के बाद यादव टोली के लोगों ने बालदेव को गिरफ्तदार कर लिया।

कायस्थ और राजपूत टोली के संघर्ष को लेकर एक बहुतही मजेदार कहानी बतायी जाती है। गाँव में किसी के यहाँ शादी ब्याह या श्राद्ध का भोज हो तो गृहपति कमला मैया को पान - सुपारी से निमंत्रित करता था। इसके बाद हिलोरें उठने लगती थी और किनारे पर चाँदी के थालों, कटोरों और गिलासों का ढेर लग जाता था। गृहपति सब बर्तन गिनकर लाता था और भोज समाप्त होने के बाद गंगा मैया को लौटा आता था। लेकिन एक बार एक गृहपति कुछ

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

थालियाँ और कटोरे चुराकर रखे उसी दिन से बर्तनदान बंद हो गया और उस गृहपति का भी नाश हो गया। उस बिगडी नीयतवाले गृहपति के बारे में दो रायें है - राजपूत टोली के लोगों का कहना है, वह कायस्थ टोली का गृहपति था। कायस्थ टोली वाले कहते थे वह राजपूत था। और यहाँ जातिवादी संघर्ष का रूप रौद्र बन गया। यादव और राजपूतों में यदुवंशियों को क्षत्रिय मानने के बारे में जो झगडे चल रहते थे उसमें कचहरी के बसंतोबाबू भी भाग लेते है और कहते थे कि " यादवों को सरकार ने राजपूत मान लिया है। इसका मुकदमा तो धूमधाम से चलेगा। " २८ इससे स्पष्ट होता है कि जातिभेद के संघर्ष में खुद वकीलसाहब भी भाग लेते हैं। जब रामकिरपालसिंघ कहते है कि उनके दादा ने एक बार डकैतों के हाथ से महारानी को बचाया था। इसी के इनाम के रूप में महारानी ने दानपत्तर लिख दिया। यह सुनने के बाद ही कायस्थ टोली के लोग राजपूत टोली के सिपैहिया टोली कहते है। ब्राहमण टोली के बूढे ज्योतिषी जातिवाद की आग फैलाना चाहते है वे राजपूतों के बारे में आस्था प्रकट करते हुए और यादवों के बारे में अनास्था प्रकट करते हुए कहते हैं -" यह राजपूतों के चुप रहने का फल है कि आज चारो ओर हर जाति के लोग गले में जनेउ लटकाए फिर रहे है। भूमफोड क्षत्री तो कभी नहीं सुना था। ..... शिव हो! शिव हो! २९

जिससे कि संघर्ष बढ़ जाय।

धनुकधारी टोली के तनुकलाल कहता है कि यदि मालिक लोग आधे दिन की मजूरी दे दे तो काम चल जाएगा। तभी बालदेव जब सिंघजी के यहाँ पूछने के लिए जाता है तो वहाँ हरगौरी गाँव में अस्पताल बनने की प्रसन्नता से महंथ साहब भंडारा खोलते हैं। गाँव भर को दावत खिलायी जाएगी, लेकिन इस सामूहिक भोज को ब्राहमण नकार देने की बात कहते हैं। ब्राहमणों ने कह दिया है कि यदि उनके लिए अलग प्रबंध न हुआ तो सब संघटन में नहीं खाएँगे। उधर तिर्पैहिया टोली के लोग भी मीनमेख निकालकर बखेड़ा करनेकी की आशंका है। वे ग्वाले लोगों के साथ एक पंगत में नहीं खाएँगे। जातिगत ऊँच - नीचता का यह संघर्ष सामूहिक प्रसन्नता के समय भी लोगों को एक साथ भोज तक के लिए परस्पर नहीं मिलने देती, हमारी एकता के प्रयास में बहुत बड़ी बाधा उत्पन्न करती है। गाँव में व्याप्त जातिगत विद्वेष की यह भावना भोज जैसे अवसरों पर ही परिलक्षित नहीं होती। तो यह पंचों और पंचायत के स्तर तक व्याप्त दिखलायी पड़ती है। पंचायत में भी जातिगत भावना का गहरा परिणाम हुआ है। यादव और राजपूतों में वहाँ भी एक - दूसरे को होशियारी के साथ नीचा दिखलाने के लिए

चाले चली जाती है। जातिवाद के संघर्ष को बढावा देनेवाला नेता - वर्ग समाज की प्रगति की ओर ध्यान नहीं देता। साम्यवाद की चेतना लेकर कार्य करनेवाले ये नेतागण शोषितों को संगठित बनाकर संघर्ष के लिए प्रेरित कर रहे है। अज्ञान अंधविश्वासों में फँसी जनता को जागृत करने का एवं अधिकार प्राप्ति के लिए संघर्ष करने की चेतावनी देने का कार्य नेताओं द्वारा संपन्न हो रहा है। ये जातिवादी लोग संथालोंपर साम्प्रदायिक आक्रमण कर उनकी फसल नष्ट करते है और संथालिनों को बेइज्जत करते है। यह भी एक जाति वर्गों का ही संघर्ष है।

यादव टोली के लोग कायस्थ और राजपूतों का विश्वास नहीं करते। सिंघजी यादव टोली के बदमाशों का सीना तानकर चलना बर्दाश्त नहीं करते। इतनाही नहीं तो यहाँ के लोग बाहर से आये डॉ॰ प्रशांत की जाति की टोह भी लेना चाहते है। क्योंकि उनकी दृष्टि से जाति चीज बहुत बड़ी है। यह भी बात महत्त्वपूर्ण है कि केवल हिंदू या ब्राहमण कहने से मानते नहीं तो गोत्र, मूल आदि के बारे में भी पूछते है। ब्राहमण गाँव में सबसे कम है लेकिन अपने को तीसरी शक्ति के रूप में प्रस्तुत करके वे अनेक अवसरों पर अपनी चाही करवा लेते हैं। फुलिया के प्रसंग को लेकर जब पंचायत होती है तब ब्राहमण लोग राजपूतोंसे यह अपेक्षा करते हैं कि वे ब्राहमणों को साथ दें। अगर राजपूतों ने साथ नहीं दिया तो

ग्वालों (यादवों) को भी वे राजपूत मान लेंगे। इस प्रकार राजपूतों के सामाजिक स्तर को नीचे गिरा देंगे। जिला कांग्रेस के सभापति ने चुनाव में राजपूत और भूमिहार में मुकाबला है। जिले भर के सेठों और जमींदारों की मोटर गाड़ियाँ दौड रही हैं। एक दूसरे के गड़े मूर्दे उखाडे जा रहे है। कटिहार कॉटन मिलवाले सेठजी भूमिहार पार्टी में हैं और फारबिसगंज जूट मिल वाले राजपूतों की ओर। इसप्रकार मैला आँचल में राजनीतिक संघर्ष है लेकिन जातियता को लेकर है। चुनाव यह केवल पैसे का तमाशा है।

यह बात बहुतही विचित्र लगती है कि इस संक्रान्तिकाल में एक ओर राष्ट्रीयता की भावना से भारतीय समाज प्रेरित होकर अंग्रेजी शासन के विरुद्ध उठ खडा हुआ था तो दूसरी ओर बिल्कूल अलग और बालदेव में संघर्ष होता है। यह संघर्ष लीडरी के बारे में है। जोतखीजी और भी झगडा निर्माण करने का कार्य करते है। उनकी राय है कि, " यादव लोग बार - बार लाठी - भाला दिखाते हैं, राजपूतों के लिए यह डूब मरने की बात है। " 30

बालदेव जी जब घर - घर घुमकर लोगों की संख्या को गिन रहे थे क्योंकि सेवादास के सपने में सतगुरु साहब ने आकर बताया था कि गाँव में इसपिताल खोलने के कारण भंडारा देना

आवश्यक बात है। तो जब इसकी तैयारी होती है लोगों को बुलाने की लिस्ट तैयार की जाती है। उसी समय भी जातिभेद को लेकर संघर्ष निर्माण होते हैं। ब्राहमण लोग इंन्कार करते हैं, वे कहते हैं कि हमारा अलग प्रबंध होना चाहिए। निम्नजातिवाले लोगों में बैठकर हम खाना नहीं खायेंगे तो लोगों को लगता है कि " बाभन भोज ही नहीं हुआ तो फिर भोज क्या। महंथ जी से कहना होगा। बाभन हैं ही कितने, सब मिलकर दस घर। " ३१ उस समय महंथ साहब बालदेव को उनके लिए मठ में अलग प्रबंध करने के लिए कहते हैं। इतने में सिपैहिया टोली के लोग भी बताते है कि ग्वाला लोगों के साथ एक पंगत में बैठकर नहीं खायेंगे वे कहते है कि हम लोगों के गाँव का आटा - घी - चीनी अलग दे दिया जाय। तभी यादव टोली के लोग भी कहते हैं कि धानुक लोगों के साथ एक पंगत में नहीं खाएंगे। और भी एक समाचार मिलता है कि बालदेव यदि इंतजामकार रहेगा तो महंथ साहेब का भंडारा भंडुल होगा। इस प्रकार इन बडी - बडी टोलियों में जातिभेद को लेकर इतना बड़ा संघर्ष है। यादव टोली के लोग बालदेव के बाजू से बोलते है। बालदेव जब अपने भाषण में गोरा मलेटरी ने हमको पकड लिया उसके बाद किस प्रकार मारा सुना रहे थे तो उतने में यादवटोली का नौजवान राजपूतों के दल को ललकारते हुए कहता है - हम लोग गांधीजी का जै करते हैं जो आप लोगों के कान में लाल मिर्च की बुकनी पड जाती है देखिए। सिंघजी ने

कायस्थ टोली के प्रमुख तहसीलदार के साथ रिश्ता जोडकर खेलावनसिंह यादव को जिस चालाकी से एक किनारे किया है इसे कोई भी नहीं समझ पायेगा। लेकिन खेलावनसिंह ने यह समझ लिया है। उस समय पंचायत में खेलावन की चर्चा भी सिंघने नहीं की। खेलावन कहते है - " लड़ाई झगडा यादव टोली से था और गले मिले तहसीलदार जी। खेलावन को " सेठ बरसा " नहीं समझना। सब चालाकी समझते है। दुनिया भी ज्ञान - गुदडी बघारता है बालदेव, मगर इतना भी समझ में नहीं आया कि सिंघ तहसीलदार से क्यों मिल रहा है। मेल - मिलाप तो यादवटोली के मुखिया से होना चाहिए। सुराजी होने से क्या हुआ। जात सुभाव नहीं छूटते। " ३२

इससे यह साबित होता है कि बालदेव भी जातिगत वाद को जानते है परंतु उसकी ओर ध्यान नहीं देते। वे भी इस संघर्ष में शामिल है। दोनों में इतना संघर्ष है कि बालदेव से वे कहते है हम तो सीधे सादे आदमी है। कलिया पर नजर रखनी चाहिए उसमें और भी गुण मौजूद है। वह जब आप को उपद्रव करेगा तो हम जिम्मेदार नहीं है। उसके मुखिया भी कहते हैं, हाँ, भाई, कायस्थ और राजपूत का क्या विश्वास है ? इससे स्पष्ट होता है कि यादव टोली के लोग कायस्थ और राजपूतों के विरुद्ध कान भर रहे हैं। क्योंकि उनमें

पहले से ही संघर्ष होता आया है और वह भी जातिवाद को लेकर।

राजनीति की कुप्रथाओं से जातिवाद को बढ़ावा मिल रहा है। जातिवाद संकुचित मनोवृति का परिणाम है। जातिवादी विचारों से प्रभावित व्यक्ति संपूर्ण समाज और राष्ट्र की तुलना में जाती को श्रेष्ठत्व देता है और अपनी ही जाती के स्वार्थों के लिए कार्य करता है। जातीवादी विचारों से प्रेरित व्यक्ति राष्ट्र, समाज के अहित कर अपनी जाती को उन्नति एवं कल्याण की कृति करने में पीछे नहीं हटता। " मैला आँचल " में भी राजनीतिक नेतागणों की यहीं स्थिति है। वे जातीवाद को विकसित करके संघर्ष का वातावरण निर्माण कर रहे हैं। गाँव में जो पंचायत व्यवस्था निर्माण की गयी है उसमें राजनीति के प्रवेश ने भ्रष्टाचार, अत्याचार, अन्याय को जन्म दिया है। पारिवारिक - जीवन में भी राजनीति के प्रवेश ने संघर्ष को जन्म दिया है। स्वार्थी नेतागण और राजनीतिक दल जातिवाद, सांप्रदायिकता, भ्रष्टाचार आदि को बढ़ावा दे रहे हैं। " मैला आँचल " में रेणुजी ने असामाजिक तत्वों को प्रश्रय देनेवाली राजनीतिक पार्टियों का चित्रण किया है। रेणुजी का कहना है कि सांप्रदायिकता के विष बीज को अंग्रेजों ने बोया परंतु विभिन्न राजनीतिक दलों ने इसको बढ़ावा दिया है। सांप्रदायिकता के कारण धार्मिक भेद और धार्मिक झगड़ों को बढ़ावा मिलता

है।

जातिवाद के विद्वेषपूर्ण एवं विषैले प्रभाव ने समूचे समाज जीवन में संकीर्ण विचारों एवं विध्वंसकारी तत्वों को जन्म दिया है। परिणामस्वरूप विभिन्न जातियों में संघर्ष, वैमनस्य शत्रुता की भावनाएँ विकसित हो रहीं है। राजनीतिक दल और नेतागण इस विष को बढावा दे रहे हैं। फणीश्वरनाथ रेणु ने स्पष्ट कहा है कि आज के युग में राजनीति का हर निर्णय हर फैसले की निर्णायक शक्ति जातिवाद बनती जा रही है। मैला आँचल में जातीवाद के समस्त पहलुओं को दिखाया है। शुध्द रक्त का दंभ भरनेवाले काली टोपीवाले हिंदू भारत में अन्य लोगों को रहने का अधिकार नहीं ऐसा प्रचार करते है तो जाति - पाँति का भेदभाव न मानने का दावा करनेवाली सोशलिस्ट पार्टी जातिविषयक जानकारी के आधार पर दाँव - पैंच लडाती हैं।

४.८ निष्कर्ष -

निष्कर्ष रूप में इस उपन्यास के व्दारा रेणुजी ने समाज - व्यवस्था में व्याप्त जातिवाद की ज्वलंत एवं जीवंत समस्या को उठाया है। वर्तमान युग में विभिन्न राजनीतिक दल और नेतागण जातिवाद, को प्रोत्साहन देकर चुनावों में सफलता प्राप्त करना चाहते हैं। रेणु का मानना है कि प्रगतिशील और प्रतिक्रियावादी

विचारों को प्रश्रय देनेवाली राजनीतिक पार्टियाँ जातीयता को जीवित रखने का कार्य कर रहीं है। वर्तमान राजनीति और जातीयता के कारण राष्ट्रीय एकता मात्र नारा बन गयी है। जातीवाद की जड़ें बहुत गहरी है। परिणामतः वर्तमान सरकार जातीय दंगों, जातीय - चुनावों, जातीय - दलों के गठन पर अंकुश लगाने में असमर्थ सिध्द हो रही है। जातीयता के रंग में रंगी जनता एक दूसरे की हत्या करने का षड्यंत्र रचने में व्यस्त दिखायी दे रही है। रेणुजीने अपने उपन्यासों में राजनीतिक संघर्ष को दिखाकर वर्तमान काल की राजनीति का पर्दाफाश करने का प्रयास किया है। पुलिस अफसरों के भ्रष्टाचारों का भी उन्होंने अपने उपन्यास द्वारा पर्दाफाश किया है। अपने साहित्य के माध्यमसे समाज पर प्रकाश डालना ही उनके साहित्य का प्रमुख लक्ष्य रहा है।

संदर्भ -

१. डॉ॰ अंजली तिवारी, फणीश्वरनाथ रेणु का साहित्य, पृष्ठ - १०६

२. फणीश्वरनाथ रेणु , मैला आँचल , पृष्ठ - १७४

३. वही पृष्ठ - १७५

४. वही पृष्ठ - १०२

५. वही पृष्ठ - १०३

६. वही पृष्ठ - १०३

७. वही पृष्ठ - १००

८. वही पृष्ठ - ९३

९. वही पृष्ठ - ९३

१०. वही पृष्ठ - ११७

११. वही पृष्ठ - १७६

१२. वही पृष्ठ - ३९

१३. वही पृष्ठ - ११२

१४. वही पृष्ठ - ११८

१५॰ फणीश्वरनाथ रेणु, मैला आँचल , पृष्ठ - १०१

१६॰ वही पृष्ठ - १९१

१७॰ वही पृष्ठ - १७४

१८॰ वही पृष्ठ - ११७

१९॰ वही पृष्ठ - १३

२०॰ वही पृष्ठ - २८

२१॰ वही पृष्ठ - ५४

२२॰ वही पृष्ठ - ६१

२३॰ वही पृष्ठ - ९१

२४॰ वही पृष्ठ - ९४

२५॰ वही पृष्ठ - १७१

२६॰ वही पृष्ठ - ३०२ से ३०३

२७॰ देवेश ठाकुर , मैला आँचल ,की रचना प्रक्रिया
पृष्ठ - ६९

२८॰ फणीश्वरनाथ रेणु , मैला आँचल , पृष्ठ - १५

२९॰ वही पृष्ठ - १५

३०॰ फणीश्वरनाथ रेणु, मैला आँचल, पृष्ठ – २४

३१॰ वही पृष्ठ – २७

३२॰ वही पृष्ठ – ३२